International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 14-05-2021, Accepted: 29-05-2021, Published: 15-06-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 89-92

मन्नू भण्डारी की कहानियों में नारी–विमर्श

धर्मेन्द्र कुमार पासी
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, मानकर कॉलेज, पूर्व वर्धमान, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश
भारतीय समाज में नारियों की दशा प्राचीन काल से ही दयनीय रही है। परंपरा और संस्कारों के नाम पर जबरन उन्हें घर की चारदीवारी में कैद रखा गया। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के सिद्धांतों का हवाला देकर उनका भरपूर मानसिक और शारीरिक शोषण किया गया। उन्हें उनके मूल अधिकारों से भी वंचित रखने की कोशिश की गई जबकि धरातल में नारियों और पुरुषों का समान अधिकार है। लेकिन वर्तमान परिस्थितियां बदल चुकी हैं। नारियां चेतना संपन्न होकर अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए विद्रोह और संघर्ष का रास्ता चुन चुकी हैं अब नारियां घर की चारदीवारी में सिमटकर नहीं बल्कि मुक्त होकर जीना चाहती हैं।
नारी जीवन से जुड़ी इन्हीं परिस्थितियों को विमर्श के माध्यम से दिखाने की कोशिश की गई है। नारी की पीड़ा वेदना सुख–दुख राग–विराग् अस्मिता आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता को विभिन्न परिप्रेक्षों में दिखाया गया है। मन्नू भंडारी की कहानियों में ये सभी तत्व व पहलु प्रत्यक्ष रूप से उभरकर हमारे सामने आते हैं जिसका चित्रण आलेख में किया गया है।

मूलशब्द: विमर्श अवधारणा अस्मिता पितृसत्तात्मक परंपरा बंधन।

प्रस्तावना
हिंदी साहित्य जगत में नारी–विमर्श एक अवधारणा है जो नारी जीवन एवं उनकी अस्मिता को लेकर विविध प्रश्न खड़ा करती है। नारी–विमर्श 'नारी' और 'विमर्श' दो शब्दों से मिलकर बना है। 'नारी' शब्द 'स्त्री' शब्द का पर्याय है जबकि विमर्श का शाब्दिक अर्थ है विचार या विवेचन आलोचना जांच व परामर्श आदि। इस प्रकार नारी–विमर्श का शाब्दिक अर्थ हुआ–नारी से संबंधित विचार या विवेचन। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि नारी से जुड़े विविध पक्षों पर चर्चा–परिचर्चा करना ही नारी–विमर्श है।
हिंदी कथा साहित्य में मन्नू भंडारी एक सशक्त हस्ताक्षर से मानी जाती हैं। वे अपनी कहानियों में नारी–विमर्श से जुड़े महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को रेखांकित करती हैं। मन्नू भंडारी की कहानियां नारी–विमर्श के विविध पक्षों को सामाजिक आर्थिक पारिवारिक और धार्मिक परिप्रेक्षों में प्रस्तुत करती हैं।
एक 'कमजोर लड़की की कहानी' मन्नू भंडारी की सशक्त कहानी मानी जाती है– यह कहानी प्रेम और विवाह के बंधन में बंधी नारी की वास्तविक स्थिति को दर्शाती है। परंपरा और संस्कारों के हाथों में पड़कर नारी इतनी कमजोर हो जाती है कि उसका व्यक्तित्व ही खंडित हो जाता है।
इस कहानी की नायिका 'रूप' है। रूप अपनी सौतेली मां की बेरुखी की वजह से मामा के यहां रहती है। वहां वह मामा के मुंहबोले बेटे ललित के करीब आ जाती है उसे पता ही नहीं चलता कि कब उसे ललित से प्रेम हो गया है। रूप ललित के साथ एक नए जीवन की शुरुआत करना चाहती है। वह जीवन की परेशानियों से दूर उन्मुक्त होकर जीना चाहती है। लेकिन कुछ समय पश्चात ललित विदेश चला जाता हैऔर इधर रूप के पिता और सगेसंबंधी उसकी शादी दूसरी जगह तय कर देते हैं। वह विवाह नहीं करना चाहती लेकिन इसका निर्णय स्वयं नहीं ले पाती है। रूप की सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि वह विरोध नहीं कर पाती और ना ही अपने जीवन में स्वतंत्र फैसले ही ले पाती है।
वह आज्ञाकारी की प्रतिमूर्ति बन इस विवाह के लिए तैयार हो जाती है। ललित जब विदेश से लौटकर आता है तब उसे अपने साथ चलने के लिए कहता है लेकिन रूप तैयार नहीं होती है। वह सामाजिक संस्कारों का हवाला देते हुए ललित से कहती है कि– "यह तुम क्या कह रहे हो ललित? जानते हो मेरी मांग में किसी और के सुहाग का सिंदूर है– अग्नि को साक्षी देकर मैं उनकी हो चुकी हूं।"[1] रूप ललित से बेहद प्रेम करती है लेकिन संस्कारों के हाथों बंधी होने के कारन ललित के साथ जाने के लिए तैयार नहीं होती है। ललित के कई बार मनाने और समझाने के पश्चात किसी तरह वह उसके साथ भागने के लिए तैयार होती है लेकिन उसके मन में एक अजीब तरह का अन्तर्द्वंद चलता ही रहता है। वह विवाह और प्रेम की परिधि में पड़कर अपना आत्मविश्वास खो बैठती है। नारी की यह स्थिति अत्यंत भयावह होती है जिसे शब्दों में सहेज पाना सरल नहीं होता। वह भावुकता के वेग में पड़कर ललित के साथ भागने का फैसला तो कर लेती है लेकिन वह इस फैसले पर अमल कर पाएगी या नहीं वह स्वयं नहीं जानती है। रूप और ललित जिस रात भागने के लिए तैयार होते हैं ठीक उसी रात उसके पति वकील साहब उसे अपने मित्र की पढ़ी–लिखी पत्नी का प्रेमी के साथ भागने की खबर सुनाते हैं। वे कहते हैं कि उनके मित्र की पत्नी की वजह से उनके मित्र की पूरे समाज में बदनामी हो रही है। इसके पश्चात वे रूप पर विश्वास प्रकट करते हुए कहते हैं कि उन्हें पूरा भरोसा है कि उनकी पत्नी कभी ऐसा कदम नहीं उठाएगी। वकील साहब की इन बातों को सुन मन–ही–मन सोचती है कि वह भी तो यही करने जा रही है जो उनके मित्र की पत्नी ने किया है। जिस वजह से समाज में उनके मित्र की बदनामी और जग–हंसाई हो रही है। अंततः वह हार जाती है उसका मनोबल टूट जाता है। वह अपना फैसला बदल लेती है और अपने प्रेमी ललित का साथ नहीं दे पाती है। वह ललित के साथ भाग सकती थी लेकिन सामाजिक रीतियों के कारण अपने प्रेमी का त्याग करती है और पति का चुनाव करती है। वह सामाजिक नियमों और नीतियों के विरुद्ध विद्रोह नहीं कर पातीयही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी और मजबूरी बन जाती है। रूप की मनःस्थितियों के संदर्भ में भगवानदास लिखते हैं कि– "व्यक्तित्व–विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं में नारी में वह क्षमता शक्ति नहीं आई थी कि वह परंपरागत आदर्शों से पूर्णतः मुक्त हो

सके...। पिता–माता, परिवार और अंत में पति के संस्कारों से आक्रांत यह कमजोर लड़की अपने प्रेमी के साथ हो लेने की हिम्मत नहीं कर सकती।"[2]

'एक बार और कहानी' की नायिका दो राहों के बीच खड़ी नजर आती है। वह जिससे प्रेम करती है उसके अलावा किसी अन्य व्यक्ति को अपना नहीं पाती, और यही उसके जीवन की त्रासदी का मुख्य कारण बनता है। बिन्नी के कुंज के साथ लगभग 14 वर्षों तक संबंध रहे हैं या फिर कहें की बिन्नी के जीवन और अस्तित्व को कुंज ने ही संवारा था। बिन्नी कुंज के प्रति पूर्णरूप से समर्पित थी और ऐसी दशा में यदि कुंजी किसी और से शादी कर ले तो बिन्नी की अवस्था क्या होगी, इसे हम भलीभांति समझ सकते हैं। वही कुंज बिन्नी की बजाय मधु से शादी कर लेता है। इस वजह से बिन्नी को काफी बड़ा धक्का लगता है वह अंदर से टूट जाती है। उसे अपने–आप को संभालना मुश्किल हो जाता है।

कुंज का विवाह होने के पश्चात भी उनमें आपसी संबंध रहते हैं लेकिन उस संबंध में कोई स्थायित्व नहीं रहता। बिन्नी के अंतर्मन में केवल कुंज की तस्वीर बसी हुई थी वह अन्य पुरुषों को भी कुंज के सांचे में ढाल कर देखती थी। जिंदगी उसके लिए बोझ बन चुकी थी। वह ना तो छूटी हुई जिंदगी को जी पा रही थी और ना ही आगे आने वाली जिंदगी को। उन दोनों के बीच प्रेम नहीं बल्कि एक औपचारिकता शेष रह गई थी जिसमें खालीपन के अलावा कुछ भी नहीं था। यह बात बिन्नी महसूस भी कर रही थी जिसे निम्न पंक्तियों में देख सकते हैं– "जो कोमल तन्तु उन दोनों को वर्षों से बांधे चला आ रहा था आज जैसे वह टूट गया है उन दोनों के बीच 'कुछ' था जो मर गया है। टूटने–मरने का यह बोध रात में और भी गहरा हो गया था– जब दो लाशों की तरह वे साथ सोए थे।"[3]

किसी प्रकार बिन्नी पुरानी जिंदगी को दरकिनार कर आगे बढ़ने की कोशिश करती है। इसके लिए वह नंदन नामक युवक से प्रेम संबंध स्थापित भी करती है लेकिन बिन्नी के मन–मंदिर में तो कुंज की मूर्ति बसी हुई है वह यहां भी असफल रह जाती है। बिन्नी को नंदन अच्छा लगता था, उसे पसंद भी करती थी लेकिन उन दोनों के बीच आकर्षण और काम के अलावा कुछ नहीं था। बिन्नी नंदन के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करना चाहती थी परंतु उसे कुंज की जगह नहीं दे पाती है। कुंज के साथ रहे संबंध ने बिन्नी के मस्तिष्क को बेसुध कर रखा है जिस वजह से उसकी जिंदगी दो राहों के बीच आकर खड़ी हो जाती है जहां से उसका जीवन उलझ जाता है और वह अकेली रह जाती है। दुख, वेदना और कसक उसके जीवन के पर्याय बन जाते हैं। उसका जीवन धीरे–धीरे क्षीण होने लगता है। वेदना और टीस की यही कथा कहानी में दर्ज है। अन्ततः कहा जा सकता है कि– "आत्मपरक व्यक्ति की दृ ि ने परिवार तथा समाज के आदर्शों तथा नैतिक मूल्यों को ही नहीं चोट पहुंचाई अपितु अपने–आप को भी खो बैठा है। उसमें समझ की न सही दिशा ही रह गई है और ना उचित सिद्धांत।"[4]

'क्षय' कहानी की नायिका 'कुंती' कामकाजी और आत्मनिर्भर नारी है। वह विषम से विषम परिस्थितियों में भी हार नहीं मानती है लेकिन परिवार के दायित्व का भार उठाते–उठाते वह टूट जाती है। कुंती के परिवार की आर्थिक अवस्था अत्यंत दयनीय है, अतः कह सकते हैं कि घर–परिवार की पूरी जिम्मेदारी अकेले कुंती पर ही है। उसके मन में भी अन्य युवतियों की भांति मस्ती और शरारत करने की इच्छा विद्यमान है किंतु वह अपनी इच्छाओं को परिवार के लिए होम कर देती है। कुंती की मां की मृत्यु हो चुकी है एवं उसके पिता भी क्षय रोग से पीड़ित हैं। पिता के साथ–साथ भाई की पढ़ाई–लिखाई का खर्च भी उसके सिर पर है। घर–परिवार की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, अपने कार्यभार के अतिरिक्त वह सावित्री को ट्यूशन पढ़ाने का काम भी करने लगती है। परिवार के वहन का दायित्व उसके लिए सहज नहीं रहता वह दिन–प्रतिदिन जिम्मेदारियों के बोझ के तले दबती जा रही थी। उसके अपने भी कुछ सपने इच्छाएं और आकाक्षाएं थी लेकिन एक–एक करके वे सब लुप्त होते जा रहे थे। वह घुटन भरी जिंदगी को जीने के लिए मजबूर हो चुकी थी। वह बेबस थी पर इसके अलावा उसके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। कुंती के आन्तरिक घुटन के संदर्भ में यही कहा जा सकता है कि एक ओर घर और बाहर का दुहरा बोझ है तो दूसरी ओर भविष्य की चिंता भी। वह स्वयं भी कुछ चाहती है उसके भी कुछ सपने कुछ आकांक्षाएं हैं इसे सोचने वाला कोई भी नहीं है।"5 वह परिवार के लिए तो जी रही थी परंतु उसके लिए जीने वाला कोई नहीं था। वह खुद तो परिवार का सहारा बनती है लेकिन स्वयं बेसहारा हो जाती है। आर्थिक जिम्मेदारियों ने उसे पूरी तरह से निचोड़कर कर रख दिया था। उसे महसूस हो रहा था कि परिवार का उत्तरदायित्व निभाते–निभाते वह स्वयं क्षय का शिकार होने लगी है। वह अपने सपनों को त्याग परिवार की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाती है पर उसका व्यक्तित्व कहीं–ना–कहीं धूमिल हो जाता है जिसे निम्न पंक्तियों में देख सकते हैं– "आदर्श और आर्थिक दबावों की टकराहट में कुंती का व्यक्तित्व जिस तरह से टूटकर बिखरता है प्रस्तुत कहानी उसका एक करुणाजनक शिलालेख है।"[6]

'नई नौकरी' कहानी की नायिका 'रमा' कामकाजी विवाहित नारी है। वह कॉलेज में इतिहास की प्रध्यापिका है। वह विचारों से पूर्णताः स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर नारी है। रमा अपने व्यक्तित्व का विकास समाज में चाहती है लेकिन रमा का पति कुंदन उसे घर की पूरी जिम्मेदारियों में लिप्त रखना चाहता है। जिस वजह से रमा अध्यापन का कार्य सही ढंग से नहीं निभा पाती। वह घर और बाहर की जिम्मेदारियों के बीच फंसकर रह जाती है। वह इन दोनों कार्यों के बीच सामंजस्य नहीं बैठा पाती है जिसके कारन वह हताश और निराश हो जाती है। उसकी स्थिति के संदर्भ में हम यही कह सकते हैं कि– "पत्नी को दोहरी क्या तिहरी भूमिका जब निभानी पड़ती है पत्नी मां और कामकाजी नारी तब तालमेल बड़ी मुश्किल से बैठता है। घर और बाहर का उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक निभाने की होड़ में उसके अंतर्मन में संघर्ष और तनाव पैदा होता है।"[7]

अंततः रमा नौकरी छोड़ देती है पर उसके जीवन में एक खालीपन आ जाता है जो उसे निगलता जाता है। नौकरी छोड़ने के पश्चात भी रमा का मन घर के कामकाज में पूरी तरह से नहीं लग पाता। रमा अपने खालीपन को कुंदन के प्रेम से भरने की कोशिश करती है पर उसे कुंदन से वह प्रेम नहीं मिलता है जिसके लिए उसने नौकरी से इस्तीफा दिया था। उसे लगता है कि कुंदन प्रेम तो करता है पर वह अपनी मान–प्रतिष्ठा के आगे उसके व्यक्तित्व को महत्त्व नहीं देता। उसे महसूस होने लगा था कि उसकी अस्मिता और व्यक्तित्व से कुंदन को कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता है। कुंदन के इस व्यवहार से वह ऊब चुकी थी। उसके अन्तर्मन में तनाव और निराशा का भाव उत्पन्न हो चुका था। वह धीरे–धीरे शोषितों की अवस्था तक पहुंचती जा रही थी। उसके अंतर्मन में नौकरी छोड़ने का मलाल अंत तक बना रहता है। रमा के व्यक्तित्व के धूमिल हो जाने और उसके अंतर्मन की पीड़ा का भाव कहानी में सर्वत्र देखने के मिलता है। वह कुंदन के सम्मुख स्वयं को समर्पित करके भी खुशी प्राप्त नहीं कर पाती है जिसके लिए उसने इतना बड़ा त्याग किया था।

'दीवार बच्चे और बरसात' कहानी की नायिका आधुनिक विचारों से लैस शिक्षित नारी है। उसका आधुनिक होना ही उसके पति के साथ तालमेल न बैठने का मुख्य कारण बनता है। वह आधुनिक विचारों को आत्मसात कर जीवन–जीने का प्रयास करती है। वह पति के चरणों में समर्पित पारंपरिक नारी नहीं अपितु नवचेतना से युक्त मुक्त होकर जीने वाली नारी है। वह

अपने ऊपर किसी भी प्रकार का सामाजिक बंधन स्वीकार नहीं करना चाहती। जब उसे लगता है कि उसका पति उसकी स्वतंत्रता पर आक्षेप लगाता है तब वह उसका विरोध करती है। इस वजह से उन दोनों के बीच हमेशा नोक–झोक होती रहती है। इस कारन वे दोनों एक साथ रहते हुए भी अजनबियों की तरह व्यवहार करते हैं।

कहानी की नायिका दकियानूसी परंपराओं में सिमटकर नहीं रहना चाहती है। वह पति के व्यक्तित्व में सिमटकर अपना व्यक्तित्व खंडित करना नहीं चाहती। वह अपनी अस्मिता और स्वतंत्रता सत्ता के प्रति पूर्णरूप से सचेत है। वह पुरानी पारंपरिक रूढ़ियों के विरोध में अपनी आवाज बुलंद करती है। वह आधुनिक विचारों से युक्त होकर अपनी बातों का स्पीकरण देते हुए कहती है कि– "गलती करूंगी तो सौ बार माफी मांग लूंगी पर जिसे मैं गलती समझू ही नहीं उसके लिए क्यों माफी मांगू? आज माफी मांग लूं। और कल फिर वह करूं, इससे क्या फायदा ड़ हम दोनों का साथ निभ न सके तो साथ रहने का क्या फायदा?"[8] इसी खटपट के कारण वह घर का चौखट लांघ देती है पर पति की अधीनता स्वीकार नहीं करती।

नायिका अपने पति की मानसिकता को परख लेती है कि पुरुष व पति केवल नारी को उपभोग की वस्तु ही समझता है। वह सदैव यही चाहता है कि नारी सामाजिक दायरों में सिमट कर रहे उन्हें नारियों की अस्मिता और अस्तित्व से कोई मतलब नहीं होता। नवचेतना से युक्त नारियों को समाज में अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें रास्ते के हर चौराहे पर संघर्ष के लिए अकेला ही खड़ा होना पड़ता है। फिर भी आधुनिक चेतना से युक्त नारियां सामाजिक कुरीतियों और पुरुषवादी वर्चस्व के खिलाफ लोहा लेने के लिए तत्पर दिखाई पड़ती हैं जैसा कि इस कहानी में स्प है। वर्तमान समय में भी नवजागृत नारियों को अनेकों यंत्रनाओं से होकर गुजरना पड़ता है।

'रानी मां का चबूतरा' कहानी की नायिका गुलाबी भी अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक है। वह स्वाभिमानी नारी है। वह किसी भी विषम परिस्थिति में अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करती है। उसकी आर्थिक स्थिति एकदम चरमरा जाती है फिर भी हार नहीं मानती। वह आर्थिक अभावों से जूझती हुई अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाती है। गुलाबी अपने शराबी पति से तंग आकर उसे बाहर का रास्ता दिखा देती है। इस प्रकार वह सामाजिक नियमों व बंधनों को खुलेआम चुनौती देती है। वह स्वयं अपने बच्चों और परिवार का दायित्व उठाती है। उसे मजदूरी का काम करता देख आस–पड़ोस के लोग उसपर तंज कसते थे लेकिन उसने कभी इन तानों की परवाह ही नहीं की। वह पूरे लगन और आत्मविश्वास के साथ अपने मार्ग पर आगे बढ़ती गई। जब गांव–समाज के लोग उसकी अवस्था पर तरस खाकर सहानुभूति दिखाने के लिए उसके बच्चों को चंदा इकट्ठा करके शिशु शिक्षा केंद्र में भर्ती कराने का प्रस्ताव लेकर उसके पास आते हैं तब वह कहती है कि– "किसी के दान–पुन्न पर पलने वाली नहीं है गुलाबी थूकती है तुम्हारे चंदे पर।"[9]

वह पूरी तरह से आत्मनिर्भर नारी है। वह समाज से किसी भी प्रकार की सहानुभूति की अपेक्षा नहीं रखती है। वह पढ़ी–लिखी नहीं है लेकिन सामाजिक ढोंग से भलीभांति परिचित है। वह जानती है कि यह समाज केवल झूठी सहानुभूति ही व्यक्त करता है। वह बेधड़क होकर अपनी और बच्चों की जिम्मेदारी उठाने के लिए सक्षम है। इस कहानी में गुलाबी अंधविश्वास का विरोध करती हुई भी दिखाई पड़ती है। वह शिक्षित न होने के बावजूद भी आधुनिक विचारों से युक्त नारी प्रतीत होती है।

'ईसा के घर इंसान' कहानी में लेखिका नन्स के जीवन के मानवीय पक्षों को उद्घाटित करती हैं। उनका मानना है कि सामान्य लोगों की तरह ही नन्स भी इंसान हैं जिनकी अपनी इच्छाएं और अभिलाषाएं होती हैं। वे भी स्वतंत्र होकर अपनी इच्छानुसार समाज में जीना चाहती हैं। सामान्य नारियों की भांति उनके अंतर्मन में भी भावनाएं जन्म लेती हैं जिन्हें वे पूरा करना चाहती हैं। लेकिन धर्म के नाम पर उनकी सभी इच्छाओं का गला घोंट दिया जाता है उनकी अस्मिता को महत्त्वहीन बना दिया जाता है। धर्म के नाम पर होने वाले इसी शोषण और अत्याचार का चित्रण कहानी में व्याप्त है साथ ही कहानी में लेखिका ने नन्स एंजिला के द्वारा इसी धार्मिक शोषण का विरोध भी दिखलाया है।

जब आत्मशुद्धि का हवाला देकर एंजिला के साथ जबरदस्ती की जाती है तब वह खुलकर इस अत्याचार के विरुध्द विद्रोह करती है। वह चर्च की चारदीवारी के बीच होने वाले कुकर्म का सारा काला चिट्ठा खोलकर रख देती है। चर्च में फादरों द्वारा नन्स को भिन्न–भिन्न तरीकों से प्रताड़ित किया जाता है उनके साथ जबरदस्ती की जाती है तथा उनका जीवन पूरी तरह से नर्क बना दिया जाता है। उन्हें इस कदर प्रताड़ित किया जाता है कि वे शोषितों और पीड़ितों की अवस्था तक पहुंच चुकी होती है। फदरों के इसी षड्यांत्र और अत्याचार का पर्दाफाश एंजिला द्वारा किया जाता है। एंजिला फादरों की संकीर्ण मानसिकता का विरोध करती हुई नारी मनोभावनाओं को प्रकट करती है– "मैं अपनी जिंदगी को अपने इस रूप को चर्च की दीवारों के बीच न नहीं होने दूंगी। मैं जिंदा रहना चाहती हूं आदमी की तरह जिंदा रहना चाहती हूं। मैं इस चर्च में घुटघुटकर नहीं मरूंगी..."[10] इन पंक्तियों से स्प है कि एंजिला नारी स्वतंत्रता की पक्षधर है वह नारी को मुक्त रूप में देखना चाहती है ताकि उनके अंतर्मन की जिज्ञासाओं की पूर्ति हो सके। इस कहानी में एंजिला एक विद्रोही पात्र बनकर हमारे समक्ष खड़ी होती है जो समस्त नारियों के आक्रोश को इस कुकर्म के खिलाफ व्यक्त करती है। इस कहानी के संदर्भ में प्रदीप सी लाड लिखते हैं कि– "इस कहानी में धर्म के नाम पर चलने वाले नारी शोषण के खिलाफ एंजिला द्वारा आवाज उठाई जाती गई है। मानसिक संस्कारों एवं आत्मशुध्दी के नाम पर चर्च के फादर युवतियों से अपनी काम–तृप्ति कर उन्हें जिंदा लाश बना देते हैं। एजिला इसी अन्याय के प्रति विद्रोह करती हैं।"[11]

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि मन्नू भंडारी की कहानियां नारी–विमर्श से जुड़े विभिन्न पहलुओं को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है। उनकी कहानियों में मौजूद नारियां जहां एक तरफ परंपराओं और बंधनों की बेड़ियों में रहने को विवश है तो वहीं दूसरी ओर वे उन्हीं बंधनों को तोड़ने के लिए प्रतिबध्द भी हैं। वे हर उस नीति का विरोध करती हैं जो उनकी स्वतंत्रता और अधिकारों का अतिक्रमण करती है। नारियों में विकसित होती जागृति, इस बात का प्रमाण है कि वे अपनी अस्मिता और अस्तित्व के प्रति पूर्णरूप से सचेत हो चुकी हैं। अतः कहा जा सकता है कि मन्नू भंडारी की कहानियां नारी–विमर्श से संबंधित समस्त परिस्थितियों को सफलतापूर्वक उभारने में सक्षम दिखाई पड़ती है।

संदर्भ सूची

1. भंडारी, मन्नू संपूर्ण कहानियां एक कमजोर लड़की की कहानी राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2008, पृष्ठ संख्या–79
2. वर्मा, डॉ0 भगवान दास, कहानी की संवेदनशीलता : सिद्धांत और प्रयोग नई कहानी के संदर्भ में कानपुर, संस्करण–1972 पृष्ठ संख्या–229
3. भंडारी, मन्नू संपूर्ण कहानियां एक बार और राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2008, पृष्ठ संख्या–320
4. शर्मा, डॉ0 वासुदेव साठोत्तरी हिंदी कहानी : मूल्यों की तलाश, आलोचना, शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1986, पृष्ठ संख्या–83

5. गोयल, डॉ0 अनिल हिंदी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका, अर्चना पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण–1976, पृष्ठ संख्या–2009
6. मिश्र, डॉ0 राजेंद्र, डॉ0 बंशीधर मन्नू भंडारी का सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लिशिंग हाउस, करनाल, हरियाणा, संस्करण–1983, पृष्ठ संख्या–69
7. मानधाने, डॉ0 धनराज, कामकाजी नारी : मानवीय संबंधों का विघटन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, संस्करण–1993, पृष्ठ संख्या–48
8. भंडारी, मन्नू संपूर्ण कहानियां, दीवार बच्चे और बरसात, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2008, पृष्ठ संख्या–88
9. भंडारी, मन्नू संपूर्ण कहानियां, रानी मां का चबूतरा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2008, पृष्ठ संख्या–216
10. भंडारी, मन्नू संपूर्ण कहानियां, ईसा के घर इंसान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2008, पृष्ठ संख्या–106
11. लाड, प्रा0 प्रदीप सी0, मन्नू भंडारी की कहानियों के प्रमुख पात्र, चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, संस्करण–1993, पृष्ठ संख्या–24